10-02-24	Name- Aayushi Diyora Class- IX School- NEW ERA SEN. SEC. SCHOOL Language- Hindi	Essay Writing Competition 2nd "सतत भविष्य की दशा में स्कूलों का योगदान"

जैसे श्री कृष्ण ने कहा था....

आज मैंने कहीं पढ़ा, "हम सोचते हैं कि हम इस पूरे संसार में एक छंद मात्र भी नहीं हैं। हम कहाँ कुछ कर सकते हैं? सोचिए परमाणुओं के बारे में – वे क्या-क्या क सकते हैं।" फरवरी 1950 हो या फरवरी 2024, सतत विकास आने वाली पीढ़ियों के लिए आज उतना ही जरूरी है जितनी बच्चों के लिए शिक्षा।

"सूर्य की आज एक नई किरण आई है,
अपने संग गर्व की लहर एक लाई है।"

तो चलिए, आज मैं आपको विचार के उस बुलबुले में ले चलती हूँ जहाँ छोटे-छोटे परमाणु-से दिमागों में जलती है बिजली ~~की~~ वो बल्ब, जो पूरी दुनिया को रोशन कर सकता है।

ओपराह विनफ्रे कहती हैं, "शिक्षा चाबी है एक नए नज़रीए को खोलने की, वह पूंजी जो आप सफलता की ओर ले जाए।" विद्यालय यानी विद्या का घर। ज्ञान का भंडार। अनेकों आप सैकड़ों विधियाँ हैं हमारे भारत में। इन सबको जोड़कर रखने वाला शिक्षा का धागा है।

बच्चों का दिमाग गीली मिट्टी की तरह होता है। उसे जितना ज़्यादा मटका बनाओगे, उतना आकार पाओगे।

'प्रेरणा' प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के द्वारा आयोजित एक उत्सव है जहाँ बच्चों विज्ञान, प्रौद्योगिकी, बोलने और लिखने की रीत तथा अन्य प्रवृत्तियाँ सिखाई जाती हैं।

स्कूलों में अनेकों प्रतियोगिताएँ होती हैं जहाँ बच्चे सतत विकास के लिए अपने विचार प्रस्तुत करते हैं।

'कम्युनीटी साईन्स सेन्टर' द्वारा आयोजित किए 'विज्ञान की स्पर्धा' में छठी ~~कक्ष~~ क के विद्यार्थी "पिलेट्स" में से ऊर्जा बनाने की तकनीकी पेश कर रहे थे। जीव-जंतुओं है 99% कारबन ~~फुटप्र~~ ~~फुटप्र~~ फुटप्रींट दूर करने का तरीका सामने रखा गया ~~चौथी~~ नौवी कक्षा विद्यार्थीयों द्वारा।

गुगल का नाम तो सभी ने सुना होगा। बस वहाँ जाईए और लिखिए, "बच्चों का विकास में योगदान।" आप हजारों चीजें पाएँगे जहाँ बच्चों ने सूर्य से लेकर पानी तक, चंद्र ~~से~~ की ऊँचाई से लेकर दवाओं की गहराई तक – हर एक पहलु के बारे में सोच लिया है। अब कहिए, किस हद तक फैली होंगी हमारी जड़े?

स्कूलों का काम अब यही है कि वे इन जड़ों को और भी गहरा पहुँचाए और पोषण तब पानी के ~~अवतार~~ अवतार में विकास को आगे बढ़ाएँ।

ब्रटलैंड की रिपोर्ट में 'सतत विकास' सबसे पहले सामने रखा गया था। तब से किसी पीछे मुड़कर नहीं देखा। सब केवल आगे बढ़ा है।

तो परमाणु ही हैं जो 'रीजकशन' की एक रील बनाते हैं; है न?

आइंस्टाईन ने कहा था, "सभी लोग समझदार होते हैं। यदि एक मछली को उसकी वृक्ष चढ़ने की वृत्ती से देखो तो वह अपना पूरा जीवन अंधेरे में गुजार देगी।"

उसी प्रकार सभी बच्चे अलग होते हैं। जब इनकी इस विभिन्नता को दिशा मिलती है तभी देश आगे बढ़ता है।

जब स्कूल बच्चों को अपने आस-पास हो रही परेशानीयों से अवगत करवाते हैं, तभी उनका कोई उपाय निकल सकता है। कहते हैं 'रट्टू तोता' बनना अच्छा नहीं होता। परंतु यदि तुममे याद करने का दम है तो उसी शक्ति को देश की परिस्थिति याद करने में लगा दो। क्या पता, यही तोता एक दिन देश के 'स्टेटीसटीक्स' बदल दें?

'परीक्षा पे चर्चा' ने भारत के बच्चों के लिए एक नया दरवाजा खोल दिया है। जब एक पेड़ का बीज जमीन में डाला जाता है तभी वह खिलता है। उसी जमीन का नाम है 'परीक्षा पे चर्चा'। यहाँ ए.आई. के साथ निर्मित कई सारी प्रस्तुतीयाँ थी जो कोयले तथा पेट्रोल जैसे साधनों को कम और 'ग्रीन-फ्यूल' को ज्यादा बढ़ावा देती थी।

एक शिक्षक ~~ही~~ जो अच्छा हो वो ही बच्चों को पढ़ने की खुशी दे सकता है। शिक्षकों का योगदान ए.पी.जे कलाम जैसे आगे की सोचने वाले बच्चे बनाना है जो ~~कि~~ केवल किताबी ज्ञान लेकर परीक्षा में उसे थूक ~~दें~~ न दें।

अनेकों प्रयास किए गए, अनेकों बार हार भी पाई। परंतु हार के जीत गए तभी तो तुम सफल हुए। आप 100% उस मौके को खो चुके हैं जब आपमें हारने का डर बैठ जाता है।

तो क्यों न किताबों को फिरसे लिखें, स्कूलों को ईंट या पत्थर से नहीं परंतु विचारों से फिरसे बनाए और सतत विकास की यह प्रथा आगे बढ़ाएँ?

क्योंकि हमें यह पृथ्वी अपने पूर्वजों से ~~नहीं मिली~~ संपत्ति में नहीं बल्कि आने वाली पीढ़ीयों से उधार में मिली है।

"सूर्य अब ढल तो जाएगा,
परंतु गर्व अब अमर हो जाएगा।
सूर्य की कल एक नई किरण आएगी,
अपने संग गर्व की नई लहर एक लाएगी।"

जैसे श्री कृष्ण ने कहा था, "तु कर्म करते जा, फल की चिंता मत कर। कर्म तेरे हाथ में पर फल तो कभी किसी के हाथ में था ही नहीं..."

तो बच्चों और स्कूलों के इस कर्म का फल भले ही हमारे हाथ में न हो, इसे मिठा बनाने का पूर्ण प्रयास रहेगा। रसायण विज्ञान की इस बात को याद रखीए कि पानी जब बर्फ होता है तो ठंडा होता है परंतु 'स्टीम' उतनी ही गरम होती है। यही छीपी हुई ऊर्जा है हमारी विद्यालय। तो जैसे '3 idiots' में कहा था, "सफलता नहीं, अच्छी सोच के पीछे भागो। सफलता आपके पीछे हाथ धोकर पड़ेगी।"